डॉ. मीरा कुमारी
संस्कृत विभाग, सी. एम. जे. कॉलेज, खुटौना
ललित नारायण मिथिला विश्विद्यालय, दरभंगा, बिहार
ईमेल आइडी - kmeera573@gmail.com
Mobile number- 6287538352

वर्ग- बीए पार्ट 1 (H) दिनांक - 18-07-2020

विषय- वैदिक साहित्य

वेद का महत्व

भारतीयों के लिए विशेष कर वैदिक धर्मावलम्बियों के लिए वेदों का ज्ञान होना अनिवार्य है। भारतीय व्यक्ति के लिए जन्म से लेकर मृत्यु पर्यंत होने वाले 16 संस्कारों का अत्यधिक महत्व है और इन संस्कारों का संपादन वेदों के मंत्रों से होता है। हमारी दैनिक प्रार्थना देवी- देवताओं की उपासन, अनुष्ठान, पर्व-त्यौहार, यज्ञ आदि मान्यताएं तथा परंपराएं सभी वेदों से प्रभावित है । वेद के बिना यह सभी काम संभव नहीं है। धार्मिक दृष्टिकोण वाले लोकमान्य तिलक जी हिंदू धर्म के लक्षण के बारे में इस प्रकार कहें है- "प्रामाण्यबुद्धिर्वेदेषु" अर्थात हिंदू वही है जो वेदों की प्रमाणिकता को स्वीकार करता है। वेदों का अध्ययन करता है। प्रमाणिकता के साथ-साथ व्यावहारिकता के लिए भी वेदों का ज्ञान होना भारतीयों के लिए अत्यधिक आवश्यक है। हमारी प्रत्येक धारणा एवं विचारो का मूल स्रोत वेद ही है। अतः वेद हिंदू धर्म संस्कृति एवं सभ्यता के मूल आधार है।

विभिन्न दृष्टिकोण से हम वेदों के महत्व को क्रम से स्पष्ट करते हैं

1. धार्मिक दृष्टि से वेदों के महत्व को जानना बहुत ही आवश्यक है। धर्मशास्त्र कार महाराज मनु ने अपने ग्रंथ में वेद को सभी धर्मों के मूल के रूप में स्वीकार किया है-"वेदोऽखिलोधर्ममूलम्।"(मनुस्मृति 2/6) प्रारंभ से लेकर आज तक धर्म की दृष्टि से वैदिक धर्मा वलियों का जितना भी क्रियाकलाप है उस सब का मूल वेद ही है, क्योंकि कोई भी देवता, कोई भी पद्धति, कोई भी संप्रदाय कोई भी मान्यता ऐसी नहीं है जिसे हिंदू और इससे संबंधित धर्मों ने स्वीकार नहीं किया हो और उसका सम्मान वेद से ना हो प्रत्येक हिंदू धर्म लाभ धर्मावलंबी के लिए वेदों की प्रमाणिकता सर्वोपरि है यहां यहां तक की ईश्वर से भी बढ़कर वेद को अधिक महत्व देते हैं। हिंदू धर्म में यज्ञ को सर्वाधिक महत्व दिया जाता है कोई भी नीति और नैमित्तिक रिया ऐसी नहीं है जिसका समाधान याद के बिना क्या जाता है इस यज्ञ के महत्व का कारण भी भेजी है वेदों में आए मंत्रों के द्वारा ही धार्मिक अवसरों पर देवताओं का आह्वान होता है तथा इन्हें मंत्रों के द्वारा देवताओं को आहुति दी जाती है। हमारे धर्म में यज्ञ के महत्व से भी यह सर्वथा प्रतिपादित हो जाता है कि हमारे जीवन में धार्मिक दृष्टि से वेदों का सर्वाधिक महत्व है।
2. ज्ञान की दृष्टि से वेदों का महत्व

   'विद्' ज्ञाने धातु से निष्पन्न वेद शब्द का अर्थ ही ज्ञान है । इस पर मनु ने सर्वज्ञानमयो हि स:'(मनुस्मृति 2/7) का कार वेद को सभी प्रकार के ज्ञान से युक्त घोषित किया है । कहने का तात्पर्य यह

है कि हमारे जीवन का ऐसा कोई भी पक्ष नहीं है जिसका दर्शन हमें वेद में नहीं होता हो। तीनो लोक, चारों वर्ण, चारो आश्रम यहां तक कि भूत, भवत्(वर्तमान) और भविष्य सभी का ज्ञान वेदों के द्वारा संभव होता है।

"चातुर्वर्ण्यं त्रयोलोकाश्चत्वारश्चाश्रमा पृथक।

भूतं भव्यम् भविष्यं च सर्वं वेदात् प्रसिध्यति।।

वेद की इस सर्वज्ञान मेहता एवं सर प्रकाश सकता के कारण हैं भारतीयों की यह मान्यता है कि हम सभी शिक्षित लोगों के लिए वेद का अध्ययन करना परम आवश्यक है।"

"योऽनधीत्य द्विजो वेदमन्यत्र कुरुते श्रमम्।

स जीवन्नेव शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वय: ।"(मनु० 2/178)

तथा

"वेदाभ्यासो हि विप्रस्य तप: परमिहोच्यते।" (मनु० 2/166)

इस प्रकार भारतीय जीवन में ज्ञान की दृष्टि से वेदों का बहुत महत्व है।

3. साहित्यिक दृष्टि से वेदों का महत्व-

साहित्य की दृष्टि से भी वेदों का बहुत महत्व है। "आदि वेद वाक्यों में वैदिक ऋषि यों को कभी ही माना गया है और समग्र संसार को देव का काव्य कहा गया है पश्चिमी अवश्य काव्यम वस्तुतः वेदों के मंत्र दृष्टा ऋषि इस मानव सिटी के सबसे पहले कभी थे वेदों में आस्था स्थल पर काव्यात्मक अभिव्यक्ति आ मिलती है इसका सबूत इस उदाहरण ही माना जाता है।कविर्मनीषी परिभू: स्वयम्भू:"। आदि वेद वाक्यों में वैदिक ऋषियों को कवि ही माना गया है और समग्र संसार को देव का काव्य कहा गया है-"पश्य देवस्य काव्यम्" । वस्तुतः वेदों के मंत्र दृष्टा ऋषि इस सृष्टि के सबसे पहले कवि थे । वेदों में स्थल-स्थल पर काव्यात्मक अभिव्यक्तियां है ऋग्वेद का उष: सूक्त इसका सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है। इसके अतिरिक्त इन्द्र, अग्न और वास्तव में काव्यात्मक का पुण: दर्शन उपलब्ध होता है कि कल्पना का अनुमान लगाया जा सकता है इसके साथ ही अधिकांश वैदिक देवता प्राकृतिक शक्तियों के मान विकृत रूप हैं जिन्हें वेद के कवियों के द्वारा ही स्वरूप प्रदान किया गया है वेद के कवियों द्वारा प्रयुक्त अलंकार एवं छवि अत्यंत उत्कृष्ट है उपमा अलंकार यहां अपने सर्वोत्कृष्ट एवं मार्मिक रूप में देखा जाता है। वैदिक छंदों का स्वरूप बहुत ही व्यवस्थित है। अधिकांश रचनाएं छंदोबद्ध है। शब्दों में गायत्री छंद, अनुष्टुप छंद और जगती छंद आदि प्रमुख है । वैदिक अनुष्टुप छंद ही आगे के लौकिक संस्कृत शब्दों में भी प्रमुख रूप में प्रयुक्त हुआ है । इस प्रकार वैदिक काल की विशेषताएं बाद के संस्कृत काव्य में उसी रूप में दृष्टिगोचर होती है। वेद भारतीय काव्य उपवन के प्रथम पुष्प है और उनकी सुरभि से बाद के सभी काव्य सुभाषित हुआ है।

4. भारतीय दर्शन की दृष्टि से वेदों का महत्व-

भारतीय दर्शन का मूल उत्स वेद है। इसी मूल उत्स से भारतीय दर्शन की विभिन्न धाराएं उत्पन्न हुई है । आस्तिक दर्शन तो वेदों के मंत्रों को ही आधार बनाकर विकसित हुए हैं, किंतु नास्तिक दर्शन भी वेदो की विचारधारा की प्रतिक्रिया स्वरूप ही प्राप्त हुए हैं। भारत का संपूर्ण प्राचीन दर्शन गौतम बुध्द के पूर्व ही प्रकाश में आ चुका था । उसी को आधार बनाकर उसकी प्रतिक्रिया स्वरुप बौद्ध दर्शन सामने आई है। जैन दर्शन का विकास भी इसी प्रकार हुआ है । अतः हम कह सकते हैं कि श्रुतियों की सहायता से ही भारतीय दर्शनों के विकास को हम भली भांति समझ सकते हैं। उपनिषदों में समग्र तथा नास्तिक दर्शन के तत्वों की बीज रूप में उपलब्धि होती है।

संक्षेप में सांख्य, न्याय, मीमांसा वैशेषिक और वेदांत आदि भारतीय वैदिक दर्शनों का तथा बौद्ध जैन चार्वाक आदि सभी वैदिक दर्शनों का आधार वेद और वैदिक साहित्य ही है। इन दर्शनों के अन्य और भेदोप-भेद भी वैदिक साहित्य को ही आधार बनाकर विकसित हुए हैं । इस प्रकार भारतीय दर्शन के आविर्भाव एवं विकास को जानने के लिए वेद का अध्ययन महत्वपूर्ण है।

5. सांस्कृतिक दृष्टि से वेदों का महत्व-

हम अपने पूर्वजों आर्यों की संस्कृति और सभ्यता को यदि जानना चाहते हैं तो उसका एकमात्र साधन वेद है ।वेद के माध्यम से ही हम लोग अपने भारतीय संस्कृति और सभ्यता को जान सकते हैं ।हमारे प्राचीन ऋषि और मुनियों के क्या विचार थे? उसने इस जगत को किस दृष्टि से देखा ?हमारे पूर्वजों का जीवन किस प्रकार व्यतीत होता था ?उनका खान-पान ,रहन-सहन, आचार और व्यवहार कैसा था? समाज का संगठन कैसा था? समाज की रीति रिवाज कैसी थी? इस सब को जानने के लिए हमको वेद का अध्ययन करना जरूरी होता है। हमारे पूर्वज किस प्रकार की स्तुतियां और प्रार्थनाएं किया करते थे? किस प्रकार उषा काल में उषा के प्राकृतिक सौंदर्य से भाव विभोर होकर उसे पुरानी युवतू की संज्ञा से विभूषित करते थे? प्रातः काल होते ही यज्ञ -यज्ञ आदि अनुष्ठान संपादन के लिए मंत्रों से आकाश गूंज उठता था ।किस प्रकार भावविभोर होकर अग्नि ,इन्द्र,वरुण, सविता ,उषा आदि देवताओं की स्तुति से उनका घर गुंजायमान होता था।इन सब विषयों के लिए वेदों का अध्ययन ही एकमात्र साधन है। प्राचीन आर्यों का जीवन कैसा था उनके मनोरंजन के साधन क्या थे? उनके सुख-दुख की अनुभूतियां, अध्ययन - अध्यापन इस सब का ज्ञान हमें वेद के अध्ययन से ही होता है। वेद सबसे प्राचीन लिखित रचना है ।केवल प्राचीन आर्यों की ही संस्कृति नहीं अपितु मानवमात्र की प्राचीन संस्कृति को जानने का एकमात्र सर्व प्राचीन एवं उपलब्ध और सर्व समाधान वेद ही है ।अतः अतीत काल में मानवों के व्यवहार तथा विचार का पता इन अमूल्य ग्रंथों की पर्यालोचना से ही प्राप्त होता है।

6. भाषा विज्ञान की दृष्टि से वेदों का महत्व-

भाषा विज्ञान की दृष्टि से भी वेदों का बहुत महत्व है वेदों में विशेष रुप से ऋग्वेद के प्राचीन सूक्तों में प्रयुक्त वैदिक भाषा विश्व की प्राचीनतम भाषाओं में एक है। आधुनिक भाषा विज्ञान विषय का प्रारंभ 18वीं शताब्दी में भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन के रूप में हुआ था तब कुछ भारोपीय विद्वानों का ध्यान संस्कृत भाषा की ओर गया तथा उन्होंने संस्कृत की तुलना अपने प्राचीन भाषाओं ग्रीक, लेटिन आदि से की। इस तुलना से वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि इन सभी भारतीय भाषाओं का विकास किसी एक

ही मूल भाषा से हुआ है जिसे उन्होंने मूल भारोपीय भाषा का नाम दिया ।मूल भारोपीय भाषा के स्वरूप को निर्धारित करने के लिए प्राचीन संस्कृत भाषा से उन्हें सबसे अधिक सहायता मिली । इसका कारण यह है कि वेदों में भाषा का प्राचीनतम रूप सुरक्षित रखा गया है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि वेद में प्रयुक्त भाषा के अध्ययन से एक ओर तो यह सिद्ध हो गया कि यही भाषा सर्व प्राचीन सुरक्षित भाषा है ।दूसरी ओर यूरोप की उपलब्ध लेटिन ग्रीक आदि भाषाओं से वैदिक भाषा की तुलना करने पर एक नवीन विज्ञान का श्रीगणेश हो गया, इसी को आगे चलकर तुलनात्मक भाषा विज्ञान तथा भाषा विज्ञान का नाम दिया गया। इस प्रकार भाषा विज्ञान की दृष्टि से भी वेदों का महत्व बहुत है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि हमारे जीवन की सभी दृष्टिकोण से वेद का काफी महत्व है । वेद ही भारतीय संस्कृति की आत्मा है। वेद में भारतीय संस्कृति सभ्यता का आचार व्यवहार सब कुछ समाहित है । हमें वेद का अध्ययन जरूर करना चाहिए।